पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़

में

हिन्दी विषय के अन्तर्गत

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित

त्रिभुवन पाण्डेय के साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन

विषयक शोध–प्रबंध

की

रूपरेखा

शोधार्थी

श्रीमती कौशल्या शास्त्री

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

शास. महावि. वैशालीनगर, भिलाई जिला–दुर्ग

22.11.16

शोध निर्देशक

डॉ. कोमल सिंह शार्वा

प्राचार्य,

भानुप्रताप देव शासकीय

स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कांकेर

23.11.16

सहशोध निर्देशक

डॉ. (श्रीमती) श्रद्धा चन्द्राकर

प्राध्यापक (हिन्दी)

शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर

स्व स्नातकोत्तर महाविद्यालय,दुर्ग

24.11.2016

प्राचार्य

शास. वि वनाथ यादव तामस्कर

स्व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग

Principal

Govt.V.Y.T.P.G. Autonomous College

Durg (C.G.)

शोधकेन्द्र

हिन्दी विभाग, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग,(छग)

रूपरेखा
(SYNOPSIS)

1. **शोध शीर्षक**

त्रिभुवन पाण्डेय के साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन

2. **भूमिका**

श्रेष्ठ व्यंग्य लेखक, प्रखर समीक्षक एवं नवगीतकार त्रिभुवन पाण्डेय छत्तीसगढ़ अंचल के वरिष्ठ साहित्यकार हैं। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। इनका साहित्य व्यंग्य, उपन्यास, व्यंग्य एकांकी एवं नवगीत आदि विधाओं से सुसज्जित है। इन्होंने अपनी रचनाओं में वर्तमान समय की सामाजिक विडम्बनाओं, राजनैतिक विद्रूपों और विसंगतियों का प्रभावी रेखांकन किया है। समाकालीन जीवन के बहुविध पक्षों पर उनकी कलम चली है। रचनाओं में सृजनात्मक भाषा विधान है, जो नवीन शब्दावली एवं ताजगी से ओतप्रोत है। भाषा कथ्य के अनुरूप अपना तेवर निरन्तर बदलती है और मुहावरों के बेहतरीन प्रयोग से समृद्ध है।

व्यंग्यकार के रूप में चेतन सम्पन्न होने से वे अपने चारों ओर फैले अंतविरोधों को देखते है। इनके व्यंग्य व्यक्ति की सुप्त चेतना को झकझोरने के उद्‌देश्य से रचित है। व्यंग्य में विषय की गंभीरता के साथ ही जीवन को प्रभावित करने वाली सर्वव्यापी विसंगतियों को जानने समझने का प्रयास किया गया है।

त्रिभुवन पाण्डेय ने नवगीत को नये तेवर और नई ऊँचाईयों तक पहुँचाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इनके नवगीतों में लोक–धर्मिता के साथ सघन रागात्मकता एवं नये शिल्प का विन्यास है। इनमें प्रभावी छंद संयोजन और शब्दों की अर्थव्यंजना की झलक मिलती है और वे युग चेतना के संवाहक हैं। नवगीत प्रत्यक्ष जीवन के अनुभवजन्य यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ ही लोक कल्याण के उपकरण भी है। नवगीत विधा की व्यंजना–शक्ति त्रिभुवन पाण्डेय के यहाँ विलक्षण ढंग से मुखर हुई है।

त्रिभुवन पाण्डेय का साहित्य विविध आयामी है। इन्होंने सशक्त व्यंग्य, सरस नवगीतों के साथ ही प्रभावी साहित्य समीक्षाएँ, रिपोर्ताज, लघु एवं व्यंग्य उपन्यास, हास्य–व्यंग्य, एकांकी, जीवनी, नाटक, कविताएँ लिखी है। मोर्चा फीचर में आपके साप्ताहिक व्यंग्य प्रकाशित

होते रहे हैं। उन्होंने महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा प्रकाशित ''भारत की जनपदीय कविता'' के छत्तीसगढ़ी खंड का संपादन भी किया है। इनके एंकाकी व उपन्यास, प्रयोगधर्मी शिल्प और नवीन भाषा शैली के कारण विशिष्ट विधि से गढ़ी गई साहित्यिक रचनाएँ हैं।

इनके मन में व्यवस्था को लेकर क्षोभ और विद्रोह है जिसे वे अपने रचना संसार के माध्यम से मानव कल्याण हेतु प्रयुक्त करते हैं। इनका साहित्य समस्त विकृति पर प्रहार कर उसे प्रकृत बनाने का सद्प्रयास है। उनकी लेखनी आज के समाज को चिंतन, मनन करने की शक्ति देती है और परिस्थितियों से संघर्ष करने का साहस प्रदान करती है।

इनकी साहित्यिक कृतियों के अनुशीलन से इनके साहित्य वैशिष्ट्य की खोज के साथ उनके व्यंग्य एवं नवगीतों सहित समग्र साहित्य का मूल्यांकन किया जाना है। इनके लिए यह आवश्यक है कि इनके यथार्थबोध, प्रेक्षण पद्धति, वैचारिक एवं संवेदनात्मक बोध की विस्तृत पड़ताल की जाए। इस दृष्टि से इनके साहित्यिक कृतियों का अनुशीलन एवं विस्तृत परीक्षण किया जाना प्रस्तावित है।

शोध प्रबंध की रचना निम्नांकित अध्यायों के अनुसार किया जाना प्रस्तावित है–

अध्याय 1 हिन्दी व्यंग्य रचना और त्रिभुवन पाण्डेय

2.1 त्रिभुवन पाण्डेय : व्यक्तित्व

2.2 त्रिभुवन पाण्डेय का सृजन संसार

2.3 व्यंग्य लेखन और त्रिभुवन पाण्डेय

अध्याय 2 त्रिभुवन पाण्डेय का नवगीत–सृजन

3.1 अन्तर्वस्तु

3.2 शिल्प–वैशिष्ट्य

3.3 सर्जनात्मक अवदान

अध्याय 3 त्रिभुवन पाण्डेय का कथात्मक गद्य

4.1 अन्तर्वस्तु

4.2 शिल्प–वैशिष्ट्य

4.3 सर्जनात्मक अवदान

अध्याय 4 त्रिभुवन पाण्डेय का स्फुट सर्जनात्मक गद्य

5.1 अन्तर्वस्तु

5.2 शिल्प–वैशिष्ट्य

5.3 सर्जनात्मक अवदा

अध्याय 5 त्रिभुवन पाण्डेय की रचनाओं में प्रगतिशीलता

5.1 व्यंग्य साहित्य में प्रगतिशीलता

5.2 कविता में प्रगतिशीलता

5.3 नवगीत में प्रगतिशीलता

उपसंहार

परिशिष्ट संदर्भ ग्रंथ सूची

3. पूर्व में किये गये कार्य की समीक्षा

त्रिभुवन पाण्डेय के व्यंग्य एवं नवगीतों पर अब तक किसी प्रकार का शोध कार्य नहीं किया गया है। इस दृष्टि से प्रस्तावित शोधग्रंथ उनके साहित्य पर केन्द्रित आरंभिक कार्य होगा।

इनके व्यंग्य आलेखों एवं नवगीतों पर नारायणलाल परमार, जीवन यदु, महावीर अग्रवाल, ललित सुरजन, डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव, कुमार रवीन्द्र, रवि श्रीवास्तव, विनोद शंकर शुक्ल, लक्ष्मी नारायण शर्मा, सतीष जायसवाल आदि साहित्यकारों ने समीक्षात्मक टिप्पणियाँ की हैं, जो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है।

4. उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के माध्यम से त्रिभुवन पाण्डेय की रचनाओं का समग्र मूल्यांकन किया जाना प्रस्तावित है ताकि उनके वैचारिक दृष्टिकोण को सामने लाया जा सके, साथ ही उनकी साहित्यिक कृतियों का अनुशीलन कर व्यंग्य एवं नवगीत परम्परा में उनका स्थान निर्धारित किया जा सके।

5. प्रस्तावित कार्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान

त्रिभुवन पाण्डेय साठोत्तरी पीढ़ी के साहित्यकार होने से इनके मन में व्यवस्था को लेकर गहरा क्षोभ और विद्रोह है। इनके व्यंग्य लेखन में समाज व्यवस्था की प्रगति में बाधा डालने वालों के प्रति आक्रोश प्रकट किया गया है। इनके व्यंग्य सामाजिक चेतना सम्पन्न है अर्थात समाज पर केन्द्रित विद्रुपों को सामने ला उसे दृष्टिबोध प्रदान करते हैं। आपकी मानवीय मूल्यों तथा गरिमा की अभिव्यक्ति बरबस ध्यानाकृष्ट करती है।

पाण्डेय जी के नवगीत अत्यंत सरस, प्रभावशाली व वर्तमान परिवेश का दिग्दर्शन कराने में समर्थ हैं और वे एक नई दृष्टि प्रदान करते है। इनके साहित्य में उनकी गहरी सांस्कृतिक समझ दृष्टिगोचर होती है। वे एक अत्यंत संवेदनशील मन, प्रभावकारी शैली, बहुआयामी क्षमता सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी है, जिसका प्रभाव इनके साहित्य पर पड़ा है।

6. प्रस्तावित शोध प्रविधि

त्रिभुवन पाण्डेय पर प्रस्तावित अनुसंधान कार्य हेतु व्यंग्य एवं नवगीत के मूल्यांकन और विवेचन के प्रचलित मापदण्डों का प्रयोग करने के साथ ही समाज वैज्ञानिक पद्धतियों की सहायता ली जाएगी।

त्रिभुवन पाण्डेय के व्यक्तिगत और उनके रचना संसार के विवेचन के लिए यथासंभव प्रश्नावली एवं साक्षात्कार पद्धति का प्रयोग करने के साथ ही समीक्षात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया जाएगा।

7. प्रस्तावित कार्य के अपेक्षित परिणाम

व्यंग्यकार त्रिभुवन पाण्डेय की साहित्य सर्जना – इस शोध अध्ययन के माध्यम से त्रिभुवन पाण्डेय के साहित्य का समग्र मूल्यांकन किया जाकर इनके व्यंग्य लेखन की विशिष्टता, उसका स्वरूप एवं व्यंग्य के पृथक विधान को जाना जा सकेगा। इसी प्रकार नवगीत

में विधा की संवेदना एवं अन्तर्वस्तु की गहनता की पहचान हो सकेगी तथा उसे विस्तार मिलेगा। रचनाकार परिवेश के प्रति कितना सजग है तथा परिवेश में व्याप्त विषयवस्तु को साहित्य के माध्यम से किस तरह लोक–हितार्थ प्रस्तुत किया है, उसे अध्ययन कर साहित्य जगत में विस्तार दिया जा सकेगा। भाषा–सामर्थ्य एवं भाषागत विशेषताओं को उद्घाटित किया जा सकेगा। सृजन के विविध आयामों के परिप्रेक्ष्य में त्रिभुवन पाण्डेय की साहित्यिक कृतियों का अनुशीलन करते हुए कथ्य एवं शिल्प की विशेषताओं को सामने लाया जाएगा।

8. संदर्भ ग्रंथ

(अ) आधार ग्रंथसूची

1. पाण्डेय त्रिभुवन, भगवान विष्णु की भारत यात्रा, नई दिल्ली : विश्व विजय प्रकाशन, 1972
2. पाण्डेय, त्रिभुवन, पम्पापुर की कथा, दुर्ग : श्री प्रकाशन, 1993
3. पाण्डेय, त्रिभुवन, झूठ जैसा सच, धमतरी : (महानदी संदेश) 1975–1978
4. पाण्डेय, त्रिभुवन, सुनो सूत्रधार, धमतरी : विकास प्रकाशन, 2000
5. पाण्डेय, त्रिभुवन, पंछी मत हँसो, धमतरी : विकास प्रकाशन, 2002
6. पाण्डेय, त्रिभुवन, महाकवि तुलसी, धमतरी :विकास प्रकाशन, 2004
7. पाण्डेय, त्रिभुवन, ब्यूटी पार्लर में भालू, दिल्ली : लोकवाड़ी प्रकाशन, 2006
8. पाण्डेय, त्रिभुवन, कागज की नाव, धमतरी : विकास प्रकाशन, 2008
9. पाण्डेय, त्रिभुवन, गाओ वन पाखी, धमतरी : विकास प्रकाशन, 2012
10. पाण्डेय, त्रिभुवन, विश्व बैंक वसति लक्ष्मी, धमतरी : विकास प्रकाशन, 2012

(ब) संदर्भ ग्रंथ

1. श्रीवास्तव, ओंकार नाथ, हिन्दी साहित्य परिवर्तन के सौ वर्ष, राजकमल प्रकाशन, 1969
2. टंडन, प्रताप नारायण, हिन्दी साहित्य का इतिहास, इलाहाबाद : नीलाभ प्रकाशन, 1973
3. वात्सायन सच्चिदानंद, आधुनिक साहित्य, दिल्ली : राजपाल प्रकाशन, 1976
4. सिंह, भगवतीप्रसाद, हिन्दी साहित्य की अनिर्दिष्ट शोध भूमिका, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1977

5. मंडल जयनारायण, हिन्दी साहित्य की रूपरेखा, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1970
6. बाजपेयी, नंद दुलारे, हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 1970
7. तिवारी, भोलानाथ, हिन्दी साहित्य, प्रयाग : हिन्दी परिषद प्रकाशन, 1971
8. सिहं, नामवर, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, इलाहाबाद : लोकभारती, 1990
9. सिंह, नामवर, कविता के नये प्रतिमान, दिल्ली : राजकमल 1968
10. परसाई रचनावली – 1, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, सं. 1989
11. परसाई रचनावली – 2, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन,, सं. 1989
12. परसाई रचनावली – 3, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, सं. 1989
13. परसाई रचनावली – 4, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, सं. 1989
14. परसाई रचनावली – 5, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, सं. 1989
15. परसाई रचनावली – 6, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, सं. 1989
16. देसाई, बाबूराव घोंड्, हिन्दी व्यंग्य विधाशास्त्र एवं इतिहास, कानपुर : चिन्तन प्रकाशन 1990
17. तिवारी, बालेन्दुशेखर, हिन्दी का स्वातन्त्रयोत्तर हास्य और व्यंग्य, कानपुर : अन्नपूर्ण प्रकाशन
18. नंदन, कन्हैयालाल, श्रेष्ठ व्यंग्य कथाएँ, पराग प्रकाशन, 1973
19. पाण्डेय, कमलाप्रसाद, छायावादोत्तर हिन्दी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, इलाहाबाद : रचना प्रकाशन, 1970
20. शरण, गिरिराज, साहित्यिक परिवेश के व्यंग्य, दिल्ली : प्रभात प्रकाशन, 1996
21. व्यास, गोपालप्रसाद, हिन्दी व्यंग्य विनोद, भारतीय साहित्य मंदिर, 1965
22. रंजीत, हिन्दी की प्रगतिशील कविता, हिन्दी साहित्य संसार, नई दिल्ली : प्रगति प्रकाशन, 1971
23. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं, ज्ञानभारती, 1980
24. मिश्र, रामदरश, आज का हिन्दी साहित्य संवेदना और दृष्टि, दिल्ली : अभिनव प्रकाशन
25. पाठक, विनय कुमार, शुक्ल, जयश्री, हिन्दी व्यंग्य–कर्म एवं समकालीन परिदृश्य बिलासपुर : प्रयास प्रकाशन, 2002
26. पाठक विनय कुमार, शुक्ल जयश्री, हिन्दी गीत–यात्रा एवं समकालीन संदर्भ दिल्ली : भावना प्रकाशन, 2005
27. पाठक विनय कुमार, शुक्ल जयश्री, अनुसंधान–प्रविधि और प्रक्रिया, दिल्ली : भावना प्रकाशन, 2012

पत्रिका

1.	हिन्दी पत्रिका	– सरिता	–	दिल्ली से प्रकाशित पाक्षिक पत्रिका
2.	हिन्दी पत्रिका	– नवनीत	–	मुंबई से प्रकाशित मासिक पत्रिका
3.	हिन्दी पत्रिका	– पहल	–	जबलपुर से प्रकाशित मासिक पत्रिका
4.	हिन्दी पत्रिका	– वसुधा	–	रीवा से प्रकाशित मासिक पत्रिका

शोधार्थी के प्रकाशित शोध –पत्र की संख्या – 4

शोधार्थी
श्रीमती कौशल्या शास्त्री
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. महावि. वैशालीनगर, भिलाई जिला–दुर्ग

22.11.16

शोध निर्देशक
डॉ. कोमल सिंह शार्वा
प्राचार्य,
भानुप्रताप देव शासकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कांकेर

23.11.16

सहशोध निर्देशक
डॉ. (श्रीमती) श्रद्धा चन्द्राकर
प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. वि वनाथ यादव तामस्कर
स्व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग

24.11.2016

प्राचार्य
शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर
स्व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दुर्ग

Principal
Govt.V.Y.T.P.G. Autonomous College
Durg (C.G.)